॥ श्रीहरिः ॥ 42

कल्याण

श्रीहनुमान-अङ्क

[परिशिष्टाङ्कसहित]

[उनचासवें वर्षका विशेषाङ्क]

गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

गीताप्रेस, गोरखपुर

लखनऊ—यहाँ अलीगंजका श्रीहनुमान-मेला विख्यात है। कभी लक्ष्मणपुर कहलानेवाली इस नगरीसे होकर प्रवाहित होती हुई गोमतीके उस पार १९वीं शतीके आरम्भमें नवाब शुजाउद्दौलाकी पत्नी, नवाब वाजिद अली शाहकी दादी तथा दिल्लीके मुगलिया खानदानकी बेटी आलिया बेगमद्वारा बसाये गये अलीगंज मुहल्लेमें एक श्रीहनुमान-मन्दिर है, जिसपर पूरे ज्येष्ठ मासके प्रत्येक मंगलवारको मुख्यत: हिन्दुओं और मुसलमानोंकी ओरसे तथा कुछ ईसाइयोंकी ओरसे भी श्रद्धापूर्वक मनौतियाँ मानी जाती हैं, चढ़ावा चढ़ाया जाता है और उन्हें प्रसाद दिया जाता है। लखनऊमें मुहर्रम और अलीगंजका महावीर-मेला—ये ही दो सबसे बड़े मेले होते हैं। मेलेसे लगभग एक सप्ताह पहलेसे ही शहरके दूर-दूर भागोंसे आकर हजारों लोग केवल एक लाल लंगोटा पहने सड़कोंपर पेटके बल लेट-लेटकर दण्डवती परिक्रमा करते हुए मन्दिर जाते हैं। हनुमानजीके इस मन्दिरका महत्त्व या 'मान्यता' इतनी अधिक है कि लखनऊमें ही नहीं, दूर-दूरतक जहाँ भी हनुमानजीका कोई नया मन्दिर बनता है, वहाँ उसकी मूर्तिके लिये पोशाक, सिंदूर, लंगोटा, घंटा और छत्र आदि यहाँसे बिना मूल्य दिये जाते हैं और तभी वहाँकी मूर्ति-स्थापना प्रामाणिक मानी जाती है।

इस मन्दिरका इतना महत्त्व होनेसे आम तौरपर लोगोंमें आश्चर्य होना स्वाभाविक ही है। विशेषकर इसलिये कि एक तो यह नया मन्दिर है, दूसरे, इसकी स्थापना, जीर्णोद्धार तथा रख-रखाव एवं देखभालमें अवधके उदार मुसलमानोंका मुख्य हाथ रहा है और तीसरे, इससे थोड़ी ही दूरपर अलीगंजके अन्तिम पालिटेक्निककी बगलसे पुराने अलीगंज-मन्दिरको जानेवाली सड़कपर एक बड़ा-सा बाग था। यद्यपि लक्ष्मणजी चाहते थे कि कुछ दूर और चलकर गोमतीके उस पार (शहरकी ओर) बनी अयोध्याराज्यकी चौकीमें विश्राम करें, जिसे बादमें लक्ष्मणटीलाकी संज्ञा दी गयी; किंतु सीताजी अब किसी भी राजभवनमें पैर रखनेको तैयार न थीं। फलत: लक्ष्मणजी तो उस चौकी अर्थात् अपने महलको चले गये और सीताजी उसी बागमें रुक गयीं, जहाँ हनुमानजी रातभर उनका पहरा देते रहे। बादमें दूसरे दिन वे लोग वहाँसे बिठूरके लिये चल दिये।

कालान्तरमें उसी बागमें एक मन्दिर बन गया, जिसमें हनुमानजीकी मूर्ति स्थापित थी और उस बागको हनुमानबाड़ी कहा जाने लगा। यह मन्दिर शताब्दियोंतक बना रहा। १४ वीं शतीके आरम्भमें बख्तियार खिलजीने इस बाड़ीका नाम बदलकर इस्लामबाड़ी कर दिया, जो आजतक चला आ रहा है।

इसके बहुत दिन बाद (सन् १७९२ से १८०२ के बीच) अवधके तत्कालीन नवाब मुहम्मद अली शाहकी बेगम रबियाके जब कई वर्षोंतक कोई संतान नहीं हुई और बहुत-से हकीम-वैद्योंकी दवाइयों तथा पीर-फकीरोंकी दुआओंने भी जवाब दे दिया, तब कुछ लोगोंने उन्हें इस्लामबाड़ीके बाबाके पास जाकर दुआ माँगनेकी सलाह दी। कहते हैं, एक दिन उन्हें स्वप्नमें हनुमानजीने दर्शन देकर कहा कि 'यदि वे इस्लामबाड़ी जायँ और संतानकी कामना करें तो उनकी अभिलाषा अवश्य पूरी होगी।' ऐसी किंवदन्ती है कि जब वे गर्भवती थीं, तब उन्हें फिर स्वप्न हुआ, जिसमें उनके (गर्भस्थ) पुत्रने उनसे कहा कि 'इस्लामबाड़ीमें उसी

जगह हनुमानजीकी मूर्ति गड़ी है, उसे निकलवाकर किसी मन्दिरमें प्रतिष्ठित किया जाय।'

फलत: बच्चेके जन्मके बाद रबिया बेगम वहाँ गयीं और नवाबके कारिन्दोंने टीला खोद डाला तथा नीचेसे मूर्ति निकाल ली गयी। बादमें उसे साफ-सुथरा करके, नवाबी आदेशसे सोने-चाँदी तथा हीरे-जवाहरातसे मण्डित एक हौदेपर बैठाकर हाथीपर रखा गया, जिससे आसफुद्दौलाके बड़े इमामबाड़ेके पास ही उसे प्रतिष्ठापित करके मन्दिर बनवाया जाय। इस हाथीको लेकर जब सब लोग वर्तमान अलीगंजकी सड़कसे जा रहे थे (जो उस समय एक गलियारा था),तब सड़कके अन्तिम छोरपर पहुँचकर उस हाथीने आगे बढ़नेसे इनकार कर दिया। महावतने लाख चेष्टाएँ कीं, किंतु हाथी ज्यों-का-त्यों अड़ा रहा। अन्तमें बेगम साहिबाने उसकी पीठसे हौदा उतरवा दिया, तब वह चलने लगा; किंतु बादमें जब वह हौदा फिर उसपर रखा गया तो वह पुन: बैठ गया। अन्तमें जब उस बाड़ीके साधुने कहा कि 'रानी साहिबा! हनुमानजी गोमतीके उस पार नहीं जाना चाहते; क्योंकि वह लक्ष्मणजीका क्षेत्र है।' तब बेगम साहिबाने वहीं सड़कके किनारे, गोमती-तटके निकट (तब गोमती अपनी वर्तमान स्थितिसे हटकर अलीगंजके निकटसे बहती थी) मूर्ति स्थापित करा दी और उसपर एक छोटा-सा मन्दिर भी बनवा दिया। साथ ही उसी साधुको सरकारी खर्चपर मन्दिरका महंत नियुक्त कर दिया गया और उसकी व्यवस्थाके लिये भी सरकारी रकम नियुक्त कर दी गयी। मन्दिरके लिये उसके आसपासकी अधिकांश जमीन महमूदाबाद रियासतकी ओरसे मुफ्तमें दे दी गयी।

किंतु मेला अभी नहीं आरम्भ हुआ था। कहते हैं, उपर्युक्त मन्दिर-स्थापनाके दो-तीन वर्ष बाद ही उस क्षेत्रमें एक बार बहुत दूर-दूरतक प्लेग महामारी फैली और सैकड़ों-हजारों लोग इस घातक रोगसे बचनेके लिये पुराने मन्दिरके हनुमानजीकी शरणमें गये, तभी वहाँके पुजारीको स्वप्न हुआ, जिसमें हनुमानजीने कहा कि 'ये लोग यहाँ नहीं, उस नये मन्दिरमें जायँ, मैं वहाँ वास करता हूँ, मेरी शक्ति वहाँकी मूर्तिमें है।' फलत: वह पूरी भीड़ नये मन्दिरमें चली आयी और उनमेंसे बहुतोंको स्वास्थ्य लाभ हुआ। तभीसे इस नये मन्दिरपर मेला लगने लगा। किंतु इसी सम्बन्धमें एक दूसरी किंवदन्ती यह है कि एक बार नवाब वाजिदअली शाहकी दादी आलिया बेगम बहुत बीमार पड़ीं। उन्होंने दुआ की और वह रोग समाप्त हो गया। इसके फलस्वरूप उन्होंने यहाँ बहुत बड़ा उत्सव मनाया, लाखोंकी खैरात बाँटी और तभीसे मेलेकी परम्परा चालू हो गयी। इसीके साथ-साथ आलिया बेगमके नामपर इस पूरे मुहल्ले (अर्थात् तत्कालीन गाँव)-का नाम अलीगंज रख दिया गया।

इन दोनोंके अतिरिक्त एक तीसरी किंवदन्ती और भी है—नवाब वाजिदअली शाहके समयमें कस्तूरी या केसरका एक मारवाड़ी व्यापारी जटमल लखनऊ आया और चौकके निकटकी तत्कालीन सबसे बड़ी सआदतगंजकी मंडीमें कई दिनतक पड़ा रहा, किंतु अधिक महँगी होनेके कारण उसके दर्जनों ऊँटोंपर लदी कस्तूरी ज्यों-की-त्यों पड़ी रह गयी, कोई खरीदार ही नहीं मिला। ज्ञातव्य है कि इस मंडीकी प्रशंसा बड़ी दूर-दूरतक थी, फारस, अफगानिस्तान तथा कश्मीर आदिसे मेवों, फलों तथा जेवरात आदिके बड़े-बड़े व्यापारी वहाँ आते थे। मारवाड़ी व्यापारी बड़ा निराश हुआ और लोगोंसे कहने लगा कि 'अवधके नवाबोंका मैंने बड़ा नाम सुना था, किंतु वह सब झूठ निकला।' इतनी दूर आकर भी खाली हाथ लौटनेके विचारमात्रसे वह बड़ा दु:खी हुआ और अयोध्याकी ओर चल दिया। रास्तेमें इसी नये मन्दिरके पास आकर जब वह विश्रामके लिये रुका, तब लोगोंके कहनेसे उसने हनुमानजीसे अपने मालकी बिक्रीके लिये मनौती मानी।

संयोगवश उन्हीं दिनों नवाब वाजिदअली शाह अपनी कैसर बेगमके नामपर कैसरबागका निर्माण करा रहे थे। किसीने उनको राय दी कि यदि इस कैसरबागकी इमारतको केसर-कस्तूरीसे पुतवा दिया जाय तो सारा इलाका ही अत्यन्त सुवासित हो जायगा? और फिर कैसर और केसरकी तुक भी मिल गयी। नवाबसाहबको यह सलाह जँच गयी और जटमलकी सारी कस्तूरी उसके मुँहमाँगे दामपर खरीद ली गयी। स्वभावत: जटमलके हर्षका कोई ठिकाना नहीं रहा, उसने हृदय खोलकर मन्दिरके लिये खर्च किया। आज भी मन्दिरके भीतर मूर्तिपर सोनेका जो छत्र लगा है, वह इसी व्यापारीका बनवाया हुआ है। उसने पूरे मन्दिरको ही नये सिरेसे बनवाया। वर्तमान स्तूप (गुंबद) भी तभीका है। तभीसे यहाँ मेला भी लगने लगा।

—श्रीसूरजनारायणजी निगम

गोरखपुर—यहाँ राप्ती नदीके तटपर 'श्रीहनुमानगढ़ी' के नामसे हनुमानजीका प्रसिद्ध स्थान है। प्रसिद्ध श्रीगोरक्ष-